डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

भारतीय साहित्य में काशी का योगदान विषयक संगोष्ठी का शुभारंभ
भारत का पर्याय है काशी – अभिराज राजेंद्र मिश्र
काशी एक नगर नहीं समग्र विद्या का एक जाग्रत केंद्र है – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
हिंदी की ललित निबंध परंपरा का केंद्र है काशी – चित्तरंजन मिश्र
काशी साहित्य की राजधानी है – अवनिजेश अवस्थी

नई दिल्ली। 29 दिसंबर 2021; साहित्य अकादेमी द्वारा भारतीय साहित्य में काशी का योगदान विषयक संगोष्ठी का आयोजन आभासी मंच पर किया गया। संगोष्ठी के पहले दिन आयोजित उद्घाटन सत्र में उद्घाटन वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कंहा कि काशी विश्व के प्राचीनतम नगरों में से एक है और केवल धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, साहित्य और कलाओं का केंद्र ही नहीं बल्कि दार्शनिकों का शहर भी है। उन्होंने ढाई हजार साल पहले भगवान बुद्ध के संदर्भ से अपनी बात शुरु करते हुए आदि शंकराचार्य, स्वामी रामानंद, कबीर, तुलसी से लेकर संस्कृत के कवियों, काशी के पंडितों और आधुनिक भारतीय साहित्य के जनक भारतेंदु हरिश्चंद्र की काशी का खाका भी पेश किया। छायावाद के प्रसिद्ध और महत्त्वपूर्ण कवि जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी के साथ उन्होंने मदन मोहन मालवीय द्वारा काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना तथा अन्य संस्थाओं जैसे नागरी प्रचारिणी सभा आदि का जिक्र करते हुए काशी को एक नगर ही नहीं बल्कि विद्या का जाग्रत केंद्र बताया। आगे उन्होंने कहा कि भारत के सभी भाषाओं के साहित्यकारों ने यहाँ से हमेशा प्रेरणा ली है, चाहे वे रवींद्रनाथ टैगोर हों या अन्य कई विदेशी लेखक। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक और प्रख्यात संस्कृत विद्वान अभिराज राजेंद्र मिश्र ने कहा कि हिमालय और गंगा की तरह ही काशी भारत का तीसरा पर्याय है। भारतीय साहित्य की दशा और दिशा काशी ने ही निर्धारित की है। काशी की महत्ता के बारे में आगे उन्होंने बताते हुए कहा कि पूरे देश में जगह–जगह के लोगों ने अपने यहाँ के कई केंद्रों को काशी का नाम दिया है। वे चाहे हिमाचल में उत्तर काशी हो या दक्षिण में काँचीपुरम। उन्होंने संस्कृत साहित्य की महान परंपरा और दर्शनशास्त्र के कई प्रकांड विद्वानों की चर्चा करते हुए कहा कि काशी में हम वैदिक परंपरा से लेकर बौद्ध परंपरा तक होते हुए आधुनिक युग के सभी ज्ञानोन्मुखी विचारधाराओं को पा सकते हैं। अपने समापन वक्तव्य में हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि काशी एकआयामी ज्ञान की परंपरा की नगरी नहीं है। बल्कि यह शास्त्रों को सम्मान तथा साथ ही चुनौती देने वाली नगरी भी है। काशी स्वीकार और अस्वीकार का, जीवन और मृत्यु के उत्सव का एक अनोखा नगर है। काशी विविधता की नगरी है और उससे भी महत्त्वपूर्ण यह है कि काशी जीवन में आसक्ति और अनासक्ति पैदा करने वाली नगरी है। काशी ने भारतीय दर्शन और संस्कृति का निर्माण किया है। हिंदी की ललित निबंध परंपरा का केंद्र भी काशी ही है, जहाँ हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्या निवास मिश्र से लेकर कुबेरनाथ राय के नाम लिए जा सकते हैं। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि काशी प्राचीन काल से ही भारत का बौद्धिक और सांस्कृतिक केंद्र है और साहित्य और कला के हर विद्वान ने यहाँ से कुछ न कुछ ग्रहण किया है।

प्रथम सत्र में उदय प्रताप सिंह ने शंकराचार्य का योगदान पर, नंद किशोर पांडेय ने काशी के संत और भक्त कवि (तुलसीदास और कबीर के विशेष संदर्भ में) पर, वीर सागर जैन ने काशी के जैन आचार्यों के योगदान पर, सदाशिव द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य में रेवा प्रसाद द्विवेदी एवं सत्यव्रत शास्त्री के योगदान तथा सत्र के अध्यक्ष एस. रंगनाथ ने शंकराचार्य के योगदान पर अपने सुचिंतित वक्तव्य दिए।

द्वितीय सत्र सूर्य प्रसाद दीक्षित की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें मंजुला राणा ने कबीर दास की लोकव्याप्ति पर, आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' और भोलाशंकर व्यास की महत्ता, कौशलनाथ उपाध्याय ने तुलसीदास के लोकमंगलकारी साहित्य पर तथा शैलेंद्र कुमार शर्मा ने रैदास की महत्ता पर अपने गंभीर आलेख प्रस्तुत किए। सूर्य प्रसाद दीक्षित ने श्याम सुंदर दास एवं लाला भगवान दीन की उपलब्धियों की चर्चा की।

दिन का अंतिम सत्र अष्टभुजा शुक्ल की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें विष्णु दत्त राकेश ने पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल के रचना–कर्म पर, रामकली सराफ ने कथासम्राट प्रेमचंद पर, अवनिजेश अवस्थी ने जयशंकर प्रसाद की कालजयी उपस्थिति पर एवं वशिष्ठ अनूप ने देवकीनंदन खत्री की महत्ता पर अपने सारगर्भित वक्तव्य प्रस्तुत किए। अध्यक्ष अष्टभुजा शुक्ल ने त्रिलोचन शास्त्री पर अपना वक्तव्य दिया। कल दो सत्र काशी की साहित्यिक पत्रकारिता, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के महत्त्व, काशी की साहित्य–आलोचना और समकालीन कविता पर क्रमशः बल्देव भाई शर्मा और अवधेश प्रधान की अध्यक्षता में आयोजित किए जाएँगे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी में संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

के. श्रीनिवासराव